# भावना की ज्योत को जगा के देखिए-वैष्णों दरबार

भावना की ज्योत को, जगा के देखिए ॥
कि बोलती है मूर्ती, बुला के देखिए ।
सौ बार चाहे, आज़मा के देखिए ।
कि बोलती है मूर्ती, बुला के देखिए ॥
भावना की ज्योत को,,,,,,,,,,,,,,,,,,

करोगे जो सवाल, तो जवाब मिलेगा ।
*यहाँ पुण्य पाप का, हिसाब मिलेगा ।
भले बुरे सब की, वो जानती हैं माँ*,
"खरी खोटी सब की, वो जानती है माँ" ।
श्रद्धा से सर को, झुका के देखिए ॥
कि बोलती है मूर्ती, बुला के देखिए ॥
भावना की ज्योत को,,,,,,,,,,,,,,,,,,

छाया में है छुपी, वो बैठी है धूप में ।
*माँ का मिलता है दर्शन, किसी भी रूप में ।
होगा हर जगह पे, विश्वास मईया का*,
"तेरे विश्वास में है, वास मईया का" ।
जिस और नज़रें, घुमा के देखिये ॥
कि बोलती है मूर्ती, बुला के देखिए ॥
भावना की ज्योत को,,,,,,,,,,,,,,,,,,

मिटाकर तूँ खुदी, माँ को धिया कर देख ले ।
चली आएगी दौड़ी, बुला के देख ले ।
हो बनिये जब था, बुलाया प्यार से*,
"मईया ने बचाया था, मंझधार से" ।
हस्ती को अपनी, मिटा के देखिए ॥
कि बोलती है मूर्ती, बुला के देखिए ॥
भावना की ज्योत को,,,,,,,,,,,,,,,,,,

अपलोडर- अनिलरामूर्तीभोपाल

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/29719/title/bhawna-ki-jyot-ko-jaga-ke-dekhiye

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |